दिसम्बर २०१४

कीमत १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

आलस

अक्रम एक्सप्रेस

संपादक:
डिम्पल महेता
वर्ष : २ अंक: ९
अखंड क्रमांक: २१
दिसम्बर २०१४

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI, Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

अनुक्रमणिका

३ ज्ञानी कहते हैं...
७ यह तो नई ही बात!
९ काल करे सो आज कर...
१० खजाना
१७ चलो खेलते हैं...
१५ अपने आपको परखकर देखो
१६ ऐतिहासिक गौरवगाथाएँ
१६ मीठी यादें

आलस

संपादकीय

बालमित्रों,

हम सभी को अनुभव है ही कि अगर रोज़ सुबह जल्दी उठना पड़े, तब आलस आता ही है, काम करने में आलस आता है, टाइम से होम वर्क पूरा करने में आलस आता है। जिन-जिन चीज़ों में आलस आता है, साथ ही साथ उससे बोरियत भी आ ही जाती है।

क्या आपको पता है कि आलस का परिणाम क्या आता है? आलसी लोग किसी को अच्छे नहीं लगते। वे जीवन में कभी भी प्रगति नहीं कर पाते।

लेकिन घबराने की ज़रूरत नहीं है। आलस को उखाड़ फेंकना कोई मुश्किल बात नहीं है। उसके लिए सिर्फ सही समझ की ही ज़रूरत है।

तो आओ, इस अंक में परम पूज्य दादाश्री से आलस के परिणाम और उसमें से बाहर निकलने की चाबियाँ प्राप्त करें और आलस को उखाड़ फेंके।

- डिम्पल महेता

ज्ञानी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : मुझे बहुत आलस आता है। मुझे यह समझाइए कि आलस करने से क्या-क्या नुकसान होते हैं? और इसमें से बाहर निकलने का रास्ता भी बताइए।

दीपकभाई : रोज़ हम सात बजे उठते हों, लेकिन अगर रविवार का दिन हो तो ऐसा होता है कि आज तो आठ बजे तक उठना ही नहीं है। फिर भी क्या उठना नहीं पड़ता? टॉइलेट बाथरूम जाना पड़ता है, भूख लगे तो नहीं उठना पड़ता?

प्रश्नकर्ता : उठना पड़ता है।

दीपकभाई : तो फिर एक घंटे बाद जो करना है, उसे एक घंटे पहले करने में क्या हर्ज(परेशानी) है? मोक्ष की ट्रेन आ जाए तब भी आलस करनेवाले को लगेगा कि एक घंटे बाद जाऊँगा। फिर ट्रेन चली जाती है। इसलिए जीवन में आलस तो बिल्कुल बेकार चीज़ है। आलस करने से हम जीवन में मिलनेवाले अच्छे मौकों को भी खो देते हैं। इसलिए हमें एक बार जगने के बाद सोना नहीं चाहिए, आलस नहीं करना चाहिए। सिर्फ उठने में ही नहीं, बल्कि किसी भी काम में आलस नहीं करना चाहिए। खाने में आलस आता है? टी.वी. देखना हो तब आलस आता है कि इसमें क्या देखना, ऐसे बोरियत होती है? नए-नए जूते पहनने हों या मम्मी-पापा के साथ घूमने जाना हो तो आलस आता है कि आज मैं नहीं आऊँगा, मुझे बहुत आलस आ रहा है?

प्रश्नकर्ता : नहीं, उसमें नहीं आता।

दीपकभाई : हाँ, मतलब आलस को हमने "पसंद-नापसंद" में बाँट दिया है इसलिए आलस करने के बजाय जिस समय जो संयोग आएँ, उन्हें आलस किए बिना पूरे करने हैं। आपको तय करना है कि आलस नहीं करना है। टी.वी. देखने में आलस नहीं करते, फिर पढ़ने में क्यों आलस करें? खाने में आलस नहीं करते, तो मम्मी कुछ काम बताएँ उसमें क्यों आलस करें? खेलने में आलस नहीं करते, तो उठने में क्यों आलस करें? जो आलस नहीं करते वे बहुत से काम कर सकते हैं। आलसी का काम कभी ठीक से नहीं हो सकता इसलिए आलस कभी भी नहीं करना चाहिए।

यह तो नई

आलस करनेवाले को बहुत टेन्शन हो जाता है। जैसे कि पढ़ाई करने में आलस किया हो तो परीक्षा के समय कितना टेन्शन होगा कि मुझे आएगा या नहीं, ठीक से लिख पाऊँगा या नहीं।

नहाने के बाद इंसान को कैसा लगता है? उसका आलस चला जाता है न? उसी तरह सत्संग से सारा आलस चला जाता है।

"काम नहीं करना है" ऐसा बोलने से आलस आ जाता है। अपने आप ही आलस आ जाता है और "करना है" ऐसा कहेंगे तो आलस चला जाएगा। "करना है" बोलते ही फिर से होशियार हो जाता है और नींद आ रही हो वह भी चली जाती है एकदम से।

ही बात!

दो तरह के लोग होते हैं। एक ऐसे कि जिन्हें काम करने में आलस आता है और दूसरे ऐसे कि जो बावले होकर काम करते हैं। दोनों के ही काम ठीक से नहीं हो पाते। "नोर्मेलिटी" रहें तो अच्छा है। जैसे कि सुबह आठ बजे कहीं पहुँचना हो तो आलसी साड़े सात बजे तक बिस्तर से नहीं उठता है और उतावला चार बजे से उठकर उठा पटक करता है। दोनों का सही नहीं है। छ, साड़े छः बजे तक उठकर समय से तैयार हो जाए, उसे नोर्मेलिटी कहेंगे।

शक्ति तो है लेकिन नासमझी की वजह से शक्ति का दुरुपयोग होता है। जैसे कि नियम से पढ़ने में आपको आलस आता है लेकिन नियम से रोज़ किसी टी.वी. प्रोग्राम को देखते ही हैं, मतलब नियम पालन करने की शक्ति तो आप में है ही लेकिन नासमझी की वजह से शक्ति का हम पढ़ाई के बदले टी.वी. देखने में इस्तेमाल करते हैं।

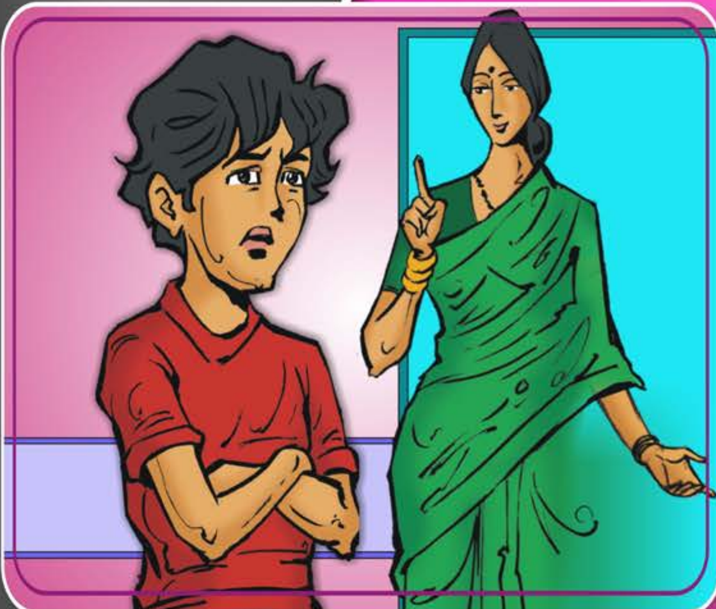

काल करे सो आज कर...

"मम्मी... मैं दोस्तों के साथ सामनेवाले मैदान में खेलने जा रहा हूँ। आज दोपहर 'ए' विंग की टीम के साथ हमारा क्रिकेट मैच है।" चौथी क्लास में पढ़नेवाले पार्थ ने रीमाबहन से कहा।

"पार्थ, अभी ही तो तू बाहर से आया है। पूरे दिन धूप में घूमेगा तो बीमार पड़ जाएगा। थोड़ी देर शांति से घर पर बैठ न, बेटा।" रसोई घर में से रीमाबहन ने पार्थ को टोका, "और तुझे निबंध लिखना था, उसका क्या हुआ? कल निबंध देने की अंतिम तारीख है।"

"लेकिन मम्मी, साल भर पढ़ाई ही की है, अब समर वेकेशन में तो थोड़ा खेलने दो", पार्थ ने बहस की, "आज शाम को मैच के बाद पहला काम वही करूँगा। कल ज़रूर स्कूल में निबंध पहुँचा दूँगा।" पार्थ ने जवाब दिया।

"बेटा, कल करूँगा ऐसे करते-करते दो हफ्ते हो गए और कल आखिरी दिन है। तुझे ही स्पर्धा में सिलेक्ट होकर अजंता-एलोरा जाना था। कल-कल करने में देर न हो जाए।" रीमाबहन ने पार्थ को चेतावनी दी।

पार्थ पढ़ने में बहुत होशियार था लेकिन साथ ही साथ आलसी भी उतना ही था। अंतिम समय तक काम पूरा नहीं करना, बहाने बनाना, आज का काम कल पर छोड़ना उसे ऐसी खराब आदत सी थी। उसकी ऐसी आदत से रीमाबहन बहुत परेशान थी। होशियार और बुद्धिशाली होते हुए भी, अपने आलस की वजह से पार्थ अपनी पढ़ाई बिगाड़ देता था। रीमाबहन को डर था कि इस आलस के वजह से पार्थ को भविष्य में कोई बड़ा मौका खोना न पड़े।

पिछले हफ्ते स्कूल से अंतर राज्य निबंध स्पर्धा के लिए तीन बच्चों को चुना गया था, उनमें पार्थ भी था। तीनों बच्चों को दो हफ्ते के अंदर निर्धारित विषय पर निबंध लिखकर, अंतिम सिलेक्शन के लिए भेजना था। पूरे राज्य से जो २० बच्चों का सिलेक्शन होगा, उन्हें अगले महीने ४ दिन के लिए अजंता-एलोरा के टूर और वहाँ निबंध लिखने का प्रशिक्षण लेने का मौका मिलनेवाला था। साथ ही विजयी बच्चों के निबंध इंटरनेट पर रखे जानेवाले थे और उन्हें सर्टिफिकेट भी मिलनेवाला था।

अजंता-एलोरा जाने की बात सुनकर पार्थ ने बहुत उत्साह से स्पर्धा में हिस्सा लिया। फिर भी अपनी आलस और कल पर छोड़ने की आदत की वजह से कल-कल करने में निबंध भेजने का आखिरी दिन भी आ गया।

"मम्मी आज का मैच बहुत महत्त्वपूर्ण है। शाम को वापस आकर निबंध पूरा कर दूँगा, प्रॉमिस। कल हम ज़रूर निबंध भेज देंगे।" ऐसा कहकर, मम्मी के कुछ बोलने से पहले ही पार्थ बाहर चला गया। रीमाबहन भी रसोई में अपने काम में लग गईं।

थोड़ी देर बाद, रसोई का काम पूरा करके रीमाबहन सोफे पर आकर बैठीं। हाथ में अखबार लिया कि डोर बेल बजी।

देखा तो बिल्डिंग में रहनेवाले डॉक्टर जोशी पार्थ का हाथ पकड़े हुए खड़े थे। बिल्डिंग के अन्य बच्चे भी पार्थ के साथ थे। पार्थ के दायें हाथ में प्लास्टर देखकर रीमाबहन को धक्का लगा।

"यह क्या हुआ?" घबराते हुए रीमाबहन ने पूछा।

"आन्टी, क्रिकेट खेलते हुए पार्थ मैदान में फिसल गया। हम उसे तुरंत डॉक्टर जोशी के पास ले गए।" पार्थ के दोस्त ने जवाब दिया।

"रीमाबहन, डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। पार्थ के दायें हाथ की तीन ऊँगलियों में फ्रैक्चर है। मैंने प्लास्टर कर दिया है, और ये कुछ दवाइयाँ हैं।"

डॉक्टर जोशी ने रीमाबहन के हाथ में दवाई का एक पैकेट देते हुए कहा, "हर हफ्ते प्लास्टर बदलना पड़ेगा। एकाध महीने में प्लास्टर निकाल देंगे।"

उसके बाद, डॉक्टर जोशी ने पार्थ से कहा, "और लिटल मास्टर, जब तक प्लास्टर नहीं खुले, तब तक तुझे पेन भी नहीं पकड़ना है।"

"थैन्क यू सो मच डॉक्टर, और बच्चों तुम्हें भी थैन्क यू" रीमाबहन ने सभी का आभार माना और आग्रहपूर्वक सभी को गरम नाश्ता करवाया।

सब के जाने के बाद रीमाबहन पार्थ के पास आकर बैठीं। दायें हाथ के प्लास्टर पर रीमाबहन ने धीरे से हाथ फिराया। "बेटा चिंता मत कर, यह तो कुछ नहीं लगा। ठीक हो जाएगा।"

"मम्मी...
लेकिन मुझे बहुत
दर्द हो रहा है।"
पार्थ की
आँखें भर आईं।

"मम्मी... लेकिन मुझे बहुत दर्द हो रहा है।" पार्थ की आँखें भर आईं।

रीमाबहन पार्थ के हाथ पर धीरे से फूंक मारकर बोली, "हे भगवान, मेरे पार्थ को जल्दी से ठीक कर देना।" यह सुनकर पार्थ हल्का सा मुस्कुराया। मम्मी की गोद में सिर रखकर वह सोफे पर ही लेट गया, "मम्मी, कितने दिन से आपसे कोई कहानी नहीं सुनी। कोई कहानी सुनाओ न।"

"क्या बात है, आज मेरे बेटे को कहानी सुननी है।" हँसकर रीमाबहन बोली। थोड़ा सोचकर कहा कि सुनो...

"एक गुरु थे। उनका नाम अमरदास था। नदी के किनारे उनका आश्रम था। उनके दस शिष्य थे। एक बार उन्होंने अपने एक शिष्य अनिरुद्ध को बुलाकर कहा "आश्रम से बाहर जाकर जलाने के लिए कुछ लकड़ियाँ लेकर शाम होने से पहले वापस आ जाओ।"

अनिरुद्ध गुरु की आज्ञा अनुसार वन में लकड़ियाँ लेने गया। उसे रास्ते में एक बड़ा वृक्ष दिखा। वृक्ष पर पत्तियाँ नहीं थीं। मृत पेड़ देखकर अनिरुद्ध खुश हो गया। उसने सोचा "जलाने के लिए यह पेड़ ठीक है। मैं कितना नसीबदार हूँ। अब, जल्दी करने की क्या ज़रूरत है? थोड़ा आराम कर लूँ, फिर दोपहर को शांति से लकड़ी काटूँगा।" इस तरह आलस करके वह पेड़ के नीचे लेट गया। थोड़ी ही देर में उसकी आँख लग गई और वह गहरी नींद में सो गया।

जब अनिरुद्ध की आँख खुली तब तक शाम हो चुकी थी और आश्रम वापस जाने का समय भी हो गया था। उठकर फटाफट उसने पेड़ की डालियाँ काटनी शुरू कर दीं। यह क्या! देखा तो शाखाएँ पूरी तरह से सूखी नहीं थी। जैसे-तैसे करके थोड़ी हरी शाखाएँ इकट्ठी करके अनिरुद्ध आश्रम लौट गया।

एक बार उन्होंने अपने एक शिष्य अनिरुद्ध को बुलाकर कहा "आश्रम से बाहर जाकर जलाने के लिए कुछ लकड़ियाँ लेकर शाम होने से पहले वापस आ जाओ।"

दूसरे दिन सभी शिष्यों को सुबह जल्दी पास के गाँव में एक धार्मिक विधि में हिस्सा लेने जाना था। सुबह नाश्ता बनाने के लिए जब एक शिष्य ने लकड़ियाँ जलाना शुरू किया तो देखा वे जल ही नहीं रही थी। शाखाएँ हरी होने की वजह से जलाने के लिए उपयोगी नहीं थीं। अंत में सभी शिष्यों को खाना खाए बिना ही जाना पड़ा। भूखे पेट, विधि में किसी की एकाग्रता नहीं रही और अनिरुद्ध सभी के गुस्से और अकुलाहट का निमित्त बना।

"ओह नो।" अफसोस के साथ पार्थ बोला, "आलस किए बिना यदि अनिरुद्ध ने लकड़ियाँ ठीक से देखी होती तो ऐसा नहीं होता।"

"सही बात है बेटा," रीमाबहन ने पार्थ के सिर पर हाथ फिराते हुए कहा, "तो इस कहानी का सार क्या है, मुझे बताओ तो?"

"कभी भी आलस मत करो। अभी का काम अभी ही पूरा करो। बाद के लिए मत छोड़ो।" धीरे से पार्थ ने जवाब दिया। और फिर अपनी गलती का पछतावा व्यक्त करते हुए पार्थ बोला, "मम्मी, इसी तरह मेरे आलस की वजह से कल मैं स्पर्धा के लिए निबंध नहीं भेज पाऊँगा और मुझे अजंता-एलोरा जाने का चान्स भी नहीं मिलेगा।"

"बेटा, मैं तुम्हारे पापा से कहूँगी। वे हमें अजंता-एलोरा ले जाएँगे। निबंध स्पर्धा के लिए तू अगले साल कड़ी मेहनत करके स्पर्धा में पहला नंबर लाने का प्रयत्न करना" ऐसा कहकर रीमाबहन ने दोनों हाथों में पार्थ का चेहरा लेकर, खूब प्यार किया।

"मम्मी, इसी तरह मेरे आलस की वजह से कल मैं स्पर्धा के लिए निबंध नहीं भेज पाऊँगा और मुझे अजंता-एलोरा जाने का चान्स भी नहीं मिलेगा।"

खजाना

चिंटू, बेटा मेरी थोड़ी मदद कर न।
बापू, आप देख नहीं रहे हैं कि मैं सो रहा हूँ? उठूँगा तब कर दूँगा।
थोड़ी देर बाद,
बेटा, अब तो थोड़ी मदद कर।
लेकिन बापू, मदन मेरा इंतज़ार कर रहा होगा। मैं उसके साथ बगीचे में खेलने जा रहा हूँ।
इस तरह चिंटू के पास कोई न कोई बहाना रहता। काम करने में उसे बहुत आलस आता था।
एक बार नाथू चाचा के पुराने दोस्त सोमभाई उनके साथ थोड़े दिन के लिए रहने आए।
सोम, उम्र की वजह से अब मुझसे खेत में बहुत काम नहीं हो पाता। लेकिन यह चिंटू तो बहुत आलसी है। मेरी बिल्कुल भी मदद नहीं करता। पूरे दिन घूमता रहता है। क्या करूँ कुछ समझ में नहीं

नाथू तू चिंता मत कर। उसकी आलस छुड़वाने का काम तू मुझ पर छोड़ दे।
एक शाम,
चिंटू, सोच यदि कोई तेरे खाते में रोज़ सुबह ८६,४०० रुपये जमा करे लेकिन रात होते ही तुम्हारी बची हुई रकम रद्द कर दे तो तुम क्या करोगे?
यह भी कोई पूछने की बात है चाचाजी? पूरी रकम निकाल लूँगा और खर्च कर दूँगा।
बेटा, हम सभी के पास "समय" नाम का यह बैंक है, जो रोज़ सुबह हमें ८६,४०० सेकंड देता है, वह समय हम आलस में बिगाड़ दें, तो नुकसान हमारा ही है।
चिंटू पर सोम चाचा की बात का कुछ असर नहीं हुआ,
थोड़े दिन बाद सोम चाचा ने एक नई तरकीब अपनाई।
चिंटू, जल्दी आ यहाँ। मुझे एक खज़ाने का नक्शा मिला है।
खज़ाने का नाम सुनते ही चिंटू दौड़कर सोम चाचा के पास आया।
तुम्हारे बापू के कमरे से मुझे यह नक्शा मिला है। इस नक्शे के अनुसार तुम्हारे बापू के खेत में १०० चांदी के सिक्के दबे हुए हैं।

ख़ज़ाना लेने की उत्सुकता से, चिंटू फावड़ा लेकर खेत की तरफ दौड़ा। यह देखकर चिंटू के बापू नाथू काका को आश्चर्य हुआ।
नाथू, चिंटू को काम करने में आलस है। घूमने-फिरने और पैसा खर्च करने में आलस नहीं है। ख़ज़ाना लेने के लिए तो वह ज़रूर खुदाई करेगा।
खेत के पास जाकर सोम चाचा ने चिंटू को आवाज़ लगाई।
अरे ओ चिंटू, खेत में थोड़ा पानी छिड़केगा तो खोदना आसान होगा।
चिंटू ने तुरंत सोम चाचाजी की बात मान ली। आने-जानेवाले लोगों को कुछ शंका न हो इसलिए उसने खेत में थोड़ी खाद भी डाल दी।
दोपहर को सोम चाचाजी और चिंटू के बापू खेत पर गए। चिंटू मेहनत से खेत की खुदाई कर रहा था।

सोम चाचाजी ने खेत में कोई बारीक पाउडर छिड़क दिया। पूरा खेत खोदने के बाद भी चिंटू को जब खज़ाना नहीं मिला, तब वह बहुत अकुला गया।
यह लो आपका नक्शा। आपका खज़ाना आपको मुबारक।
और फिर चिंटू आलसी बन गया। पहले की तरह काम धंधा छोड़कर समय बिगाड़ने लगा।
चिंटू, ओ चिंटू, यहाँ आ, यह देख!
बापू, मैं खेल रहा हूँ।
लेकिन बेटा, तेरा खेत खज़ाने से भर गया है।
खज़ाने का नाम सुनकर चिंटू अपने बापू के पास दौड़ा। खेत में हरी भरी सब्ज़ी उगी हुई थी।
बापू, खज़ाना कहाँ है? यह तो सब्ज़ी है।
अरे बेटा, तू अपने उसी खज़ाने को देख रहा है, जो खेत में दबा हुआ था। यह सब्ज़ी तू बाज़ार में बेचेगा, तो तुझे १०० चांदी के सिक्के मिलेंगे।
यह सुनकर चिंटू को मेहनत रूपी खज़ाने की पहचान हुई। उस दिन से चिंटू ने आलस रूपी दुश्मन को हमेशा के लिए अलविदा कर दिया और मेहनत रूपी हितैषी को हमेशा के लिए अपने पास सँभालकर रखा!

अपने आपको परखकर देखो

नीचे के अलग-अलग इन्सिडेन्स में पपलू के दिए गए जवाबों को "आलस किया" या "आलस नहीं

मम्मी : बेटा, उठ सात बज गए हैं। स्कूल जाने के लिए देर हो जाएगी।
पपलू : मम्मी, बस पाँच मिनिट में उठ रहा हूँ। मुझे बहुत नींद आ रही हूँ।

मम्मी : टी.वी. बंद कर और पढ़ने बैठ। आधे घंटे देखने का कहकर तू एक घंटे से देख रहा है।
पपलू : सॉरी मम्मी, मेरा ध्यान ही नहीं रहा। मैं टी.वी. बंद करके पढ़ने ही बैठ रहा हूँ।

मम्मी : उठ बेटा, सोने से पहले ब्रश कर लो, नहीं तो दांत सड़ जाएँगे।
पपलू : मम्मी, आज मैं बहुत थक गया हूँ, कल सुबह मैं जल्दी उठकर ब्रश कर लूँगा।

मम्मी : पपलू बेटा, चलो अब घर में। बहुत होम वर्क बाकी है।
पपलू : मम्मी, यह एक गेम पूरा होने दो। जैसे ही पूरा होगा वैसे ही मैं तुरंत होम वर्क करने बैठ जाऊँगा।

पड़ोसी : पपलू बेटा, अंकल घर की चाबी भूल गए हैं। उन्हें चाबी दे आओगे?
पपलू : हाँ आंटी, मैं अभी दौड़कर अंकल को चाबी दे आता हूँ।

मम्मी : पपलू, रात के दस बज गए हैं। स्कूल बैग तैयार कर लो।
पपलू : मम्मी, कल सुबह कर लूँगा।

चलो खेलते हैं...

१. = दाईं और से एक दीयासली लेकर बाईं और रखो, और दोनों तरफ का जवाब एक समान करो।

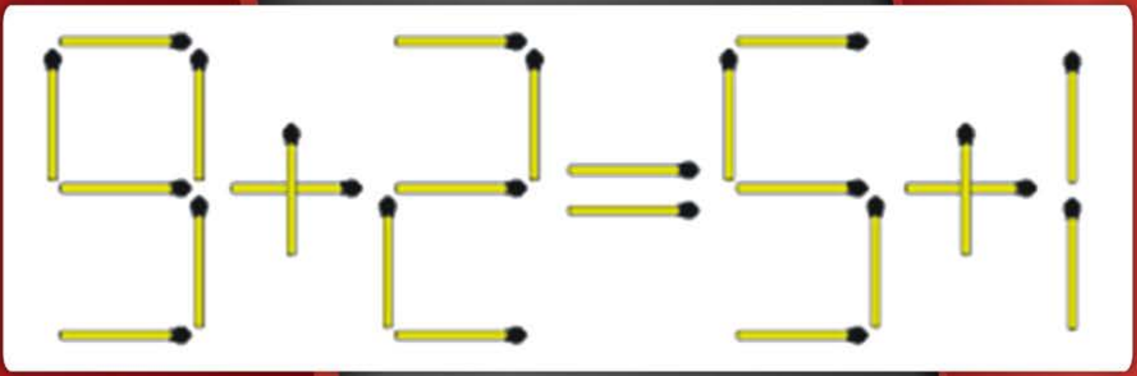

२. बिंदु जोड़िए।

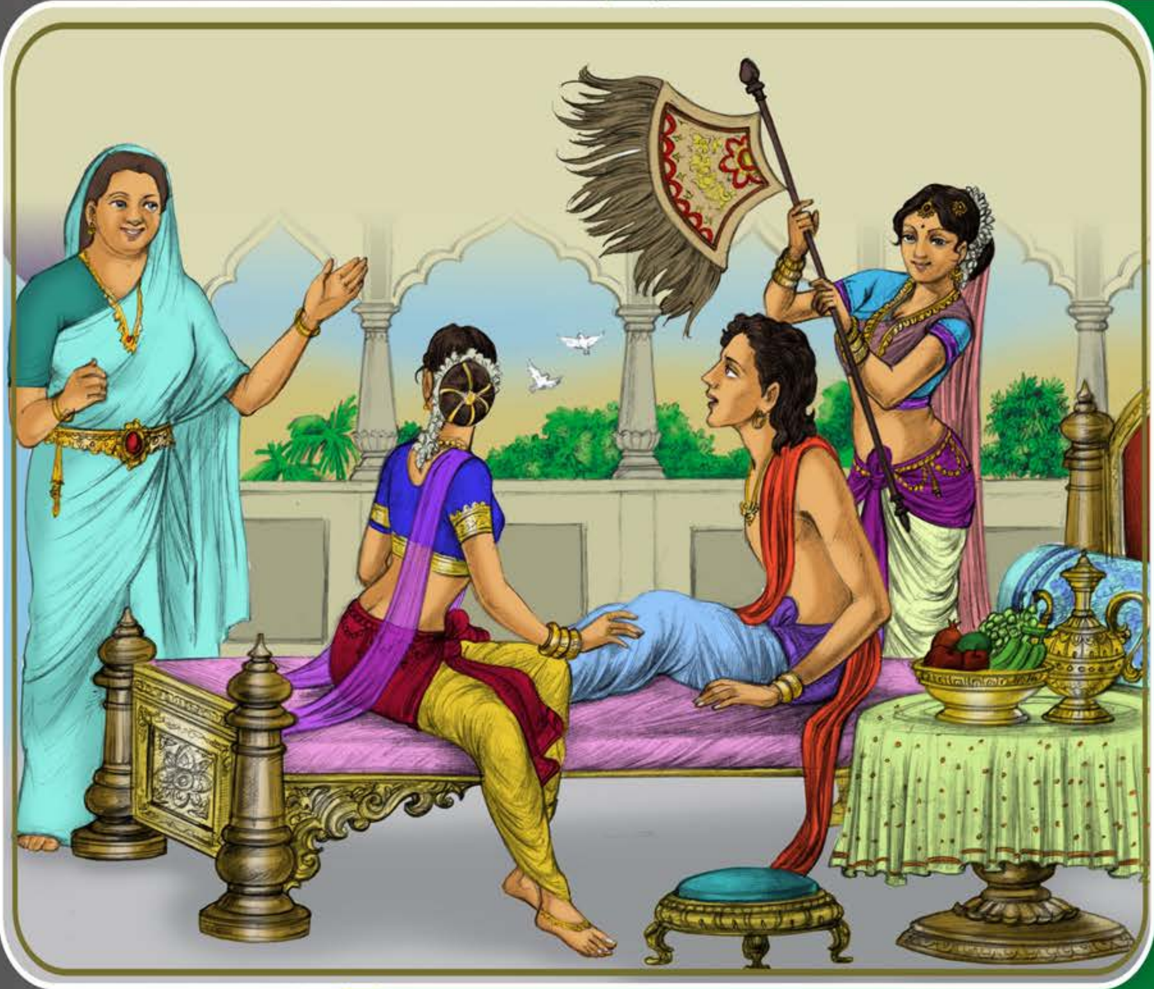

ऐतिहासिक गौरवगाथाएँ

राजगृही नगरी में गोभद्र नामक सेठ रहते थे। उन्हें भद्रा नाम की पत्नी और शालिभद्र नाम का पुत्र था। गोभद्र सेठ की संपत्ति को आँकना मुश्किल था। शालिभद्र, उनका एक लौता पुत्र होने की वजह से उन्होंने उसे बहुत ही लाड़प्यार से पाला था। अत्याधिक सुख में पले बढ़े होने के कारण वह दुनियादारी से बिल्कुल अंजान था। ३२ राजकुमारियों के साथ उसकी शादी हुई थी। जैसे पृथ्वी पर ही वह स्वर्ग का सुख भोग रहा था। लोग शालिभद्र के स्वर्गीय सुख से ईर्ष्या करते थे।

समय के साथ गोभद्र सेठ की मृत्यु हो गई और माता भद्रा के हाथ में सारी ज़िम्मेदारी आ गई।

एक बार कोई परदेशी व्यापारी श्रेणिक राजा के पास रत्नजड़ित कंबल बेचने के लिए आया लेकिन उसकी कीमत बहुत ज्यादा होने की वजह से

श्रेणिक राजा ने उसे नहीं खरीदा। मगध जैसे राज्य के राजा भी इसे अतिमूल्यवान समझकर नहीं खरीद पाए, इससे निराश होकर व्यापारी नगर में घूमते-घूमते भद्रा सेठानी के मकान के पास आ पहुँचा। सेठानी ने उसके सभी कंबल उसकी मुँह माँगी कीमत पर खरीद लिए।

यह बात श्रेणिक राजा की पत्नी, चेल्लना रानी ने सुनी इसलिए उन्होंने श्रेणिक राजा को अपने लिए किसी भी कीमत पर एक रत्नजड़ित कंबल खरीदकर लाने का आग्रह किया। राजा ने व्यापारी को वापस बुलाया लेकिन उन्हें पता चला कि सभी कंबल भद्रा सेठानी ने खरीद लिए थे। इसलिए राजा का सेवक शालिभद्र सेठ की हवेली पर पहुँचा और उसने विनती की कि एक कंबल राजा जी को चाहिए। यह सुनकर, भद्रा सेठानी नम्रता से बोली, "अरे, तुम्हें थोड़ी देर हो गई। उन रत्न कंबलों के तो मेरी पुत्रवधुओं ने पायदान बना दिए।"

रत्नकंबलों का पौंछा!! श्रेणिक राजा को बहुत आश्चर्य हुआ। उन्होंने खुश होकर शालिभद्र सेठ को अपने दरबार में आने का निमंत्रण दिया। वे इतनी संपत्ति के उस महान स्वामी को देखना चाहते थे। राजा के निमंत्रण का जवाब देते हुए भद्रा सेठानी ने कहा, "मेरा बेटा कभी भी हवेली से बाहर नहीं निकला है। अपना बालक समझकर

"जब तक खुद को किसी भी व्यक्ति की पराधीनता हो, तब तक सारा सुख नाम का ही सुख है। सुख तो उसे कहेंगे जिसमें किसी की कोई दख़ल न हो।"

आप बुजुर्ग की तरह घर पधारेंगे तो हम धन्य हो जाएँगे।"

श्रेणिक राजा बड़े दिल के थे। उन्होंने भद्रा सेठानी की बात मान ली और उनके यहाँ पधारे। भद्रा सेठानी जब ऊपर की मंजिल पर बैठे हुए पुत्र को बुलाने गई तब पुत्र ने कहा, "माँ, उन्हें जो चाहिए वह देकर खुश कर दो। इसमें मुझे क्यों बुला रही हो?"

"लेकिन बेटा, वे तो हमारे स्वामी हैं, राजा हैं। हमारा अच्छा-बुरा करने के अधिकारी हैं। तुम्हें सामने से जाकर उनका स्वागत करना चाहिए।"

"स्वामी!!" शब्द सुनकर शालिभद्र को धक्का लगा। "मेरे सिर पर कोई स्वामी है? इतना वैभव होने पर भी मैं पराधीन हूँ?" यह सोचकर शालिभद्र का मन उदास हो गया। उसको लगा "जब तक खुद को किसी भी व्यक्ति की पराधीनता हो, तब तक सारा सुख नाम का ही सुख है। सुख तो उसे कहेंगे जिसमें किसी की कोई दख़ल न हो।" वे बेमन से राजा के पास आए और नमस्कार करके तुरंत ही ऊपर चले गए लेकिन उनके मन में यह बात की चुभन रह गई थी।

उसी दौरान नगर में धर्मघोष मुनि पधारे। उन्होंने राजा का भी राजा बनने का मुनिमार्ग दिखाया। शालिभद्र के दिल में यह बात उतर गई। वे माता से दीक्षा की अनुमति लेने आए। माता ने उन्हें सलाह दी, "सभी चीज़ों को तू एक साथ त्याग देगा तो बेकार में दुःखी होगा। उसके बजाय तू रोज़ थोड़ी-थोड़ी चीज़ों का त्याग करता जा। उसके बाद कठोर जीवन का परिचय होने के बाद सब त्याग देना।"

धीरे-धीरे शालिभद्र अलौकिक संपत्ति की तरफ जाने के लिए तैयार होने लगा। ऐसी संपत्ति जिसे कोई राजा या चक्रवर्ती छीन न सकें।

...क्रमशः

मी ठी या दें

एक बार नीरू माँ एक ब्रह्मचारी भाई के साथ वॉक कर रही थीं। अचानक उन्होंने उन भाई से कहा, "यदि हमें रोटी का टुकड़ा और चटनी खाने को मिले तो भी यहीं पड़े रहना चाहिए।" उस समय तो उन भाई ने नीरू माँ से कोई सवाल-जवाब नहीं किए। उन्हें लगा, "नीरू माँ को ठीक लगा होगा इसलिए मुझे ऐसा कहा होगा।"

लेकिन बाद में उन भाई की विचारना शुरू हो गई कि नीरू माँ ने मुझसे ऐसा क्यों कहा होगा? फिर उन्हें ध्यान में आया कि कई बार खाते समय उन्हें भीतर ऐसा होता कि "यह अच्छा लगा, यह अच्छा नहीं लगा।" उन्होंने कभी अपनी पसंद-नापसंद बताई नहीं थी फिर भी अगर नीरू माँ के साथ बैठे हों तो उन्हें सब पता चल जाता।

उस दिन से उन भाई को "पसंद-नापसंद" सब गौण हो गया। उनका निश्चय पक्का हो गया कि रोटी का टुकड़ा और चटनी मिलेगी तो भी वे नीरू माँ के साथ ही रहेंगे।

ऐसे में रसोई के महाराज बदल गए। उन भाई को सुबह जल्दी नौकरी के लिए निकल जाना पड़ता था। महाराज बदल जाने के बाद, रसोई घर में इस बात का किसी को ध्यान नहीं रहा कि सुबह इन भाई का टिफिन तैयार करना है। कई दिनों तक ऐसा ही चला। उन भाई ने भी किसी से टिफिन तैयार करने के लिए नहीं कहा।

नीरू माँ को जब इस बात का पता चला, तब उन्होंने तुरंत ही ज़िम्मेदार बहनों को बुलाकर कहा, "ये लड़का इतने दिनों से दोपहर को भूखा रहता है और आप लोगों को पता तक नहीं है" और फिर उन्होंने उन भाई के लिए टिफिन की सब व्यवस्था कर दी।

भाई को भी अपनी भूल समझ में आई कि बात नीरू माँ तक पहुँचने से पहले ही उन्हें किसी से टिफिन के लिए कह देना चाहिए था। लेकिन नीरू माँ ने बिल्कुल भी उनकी गलती नहीं निकाली। ऊपर से उनकी एडजस्टमेन्ट लेने की शक्ति पर खुश हुए।

इस तरह नीरू माँ उनके साथ रहनेवाले सभी का पूरी तरह ध्यान और देखभाल रखती थीं।

दिवाली वेकेशन दौरान LMHT के बच्चो के लिए फ्यूज़न के फोटोसे

पज़ल के जवाब

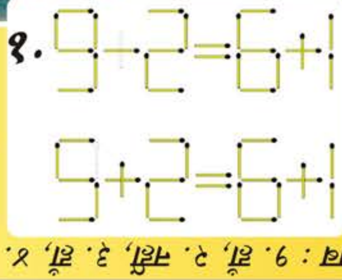

अपने आपको परखकर देखो!के जवाब : १. हाँ, २. नहीं, ३. हाँ, ४. हाँ, ५ नहीं, ६. हाँ

Akram Express

December 2014
Year : 2, Issue : 9
Conti. Issue No.: 21

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
LPWP Licence No. CPMG/GJ/119/2014
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

गांधीधाम में मनाई गई परम पूज्य दादाश्री की१०७वीं जन्म जयंति महोत्सव का शुभारंभ कल्चरल डेन्स की एक झलक

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

૧. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

૨. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ૮૯૫૫૦૦૭૫૦૦ पर SMS करें।

૧. कच्ची पावती नंबर या ID No., ૨. पूरा एड्रेस पिन कोड के साथ, ૩. जिस महीने का मैगज़िन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Printer, Publisher and Owner - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, Simandhar City, Adalaj-382421.Dist-Gandhinagar.